विचार बिन्दु

अहम् की मृत्यु द्वारा आत्मा का वर्जन करते-करते अपने रुपातित स्वरुप को आत्मा प्रकाशित करता है। –टैगोर

.....पराया माल अपना

साहित्यिक हलकों में कभी-कभार इस तरह की अप्रिय चर्चाएं सर उठा लेती हैं कि अमुक ने अमुक की रचना अपने नाम से छपवा ली। यदा-कदा इस तरह की अवांछित हरकतों का एक थोड़ा परिष्कृत रूप भी सामने आता है जहां चोरी तो होती है मगर कौशल और नफ़ासत के साथ। कभी कोई किसी रचना का कुछ अंश अपनी रचना में चिपका देता है तो कभी कोई चरित्रों के नाम या घटना स्थल बदल कर पराया माल अपना कर लेता है। और ऐसा केवल साहित्यिक हलकों में ही होता हो ऐसी बात भी नहीं है। कलाओं की दुनिया में, बल्कि समग्र बौद्धिक संपदा की दुनिया में इस तरह की अनैतिक गतिविधियां होती रहती हैं। बॉलीवुड में बहुत सारे संगीतकारों की कुख्याति इसी वजह से है, बहुत सारी फ़िल्में फ्रेम-दर-फ्रेम अन्यत्र से उठाई गई हैं और इस सबका मुलायम वर्शन वह है जहां अमुक से प्रेरित कहकर यही काम कर लिया जाता है। पेंटिग्स की दुनिया में, डिज़ाइन की दुनिया में, फ़ैशन की दुनिया में – कहां ऐसा नहीं होता है। बड़े और महंगे ब्रांड्स और डिज़ाइनरों के बहुत महंगे नकली उत्पाद धड़ल्ले से बेचे जाते हैं। चोरी का ही एक और रूप है मिलते-जुलते नामों से अपना माल बेचने का प्रयास करना। याद किया जा सकता है कि किसी लोकप्रिय बोतलबंद पानी की बोतल के लेबल से एकदम मिलते जुलते डिज़ाइन वाला लेबल लगाकर, ब्रांड के नाम में मात्र एक अक्षर का हेरफेर करके ग्राहक की आंखों में धूल झोंकी जाती है। ऐसा ही लोकप्रिय बिस्किट्स एवं अन्य उपभोक्ता वस्तुओं के मामले में भी होता है। यह करके ग्राहक को तो ठगा ही जाता है, इन उत्पादों के मूल निर्माताओं को भी हानि पहुंचाई जाती है। यह चोरी का एक और रूप है। हमारे पाठकों को याद होगा कि कई दशक पहले दिल्ली में एक कैसेट कम्पनी ने बड़ी और नामी कम्पनियों के महंगे कैसेट्स के मुकाबले में अपने सस्ते कैसेट बाज़ार में उतार कर तहलका मचा दिया था। मुख्यत: बॉलीवुड के गानों के इन कैसेट्स में धुन और संगीत लगभग वही होता था लेकिन गायक मूल गायक की आवाज़ का भ्रम देने वाला कोई अन्य होता था। बाद में इन नकलची गायकों ने भी अपनी जगह बना ली, और वह कैसेट कंपनी तो एक साम्राज्य में ही तब्दील हो गई।

अकादमिक दुनिया में तो यह चोरी हाल के वर्षों में अधिक ही चलन में आई है। जबसे पदोन्नित के लिए प्रकाशित कार्य की महत्ता बढ़ी है, पदोन्नति के आकांक्षी "विद्वज्जन दूसरों के काम को अपने नाम से प्रकाशित करवाने का शॉर्ट कट कुछ ज़्यादा ही अपनाने लगे हैं। शोध प्रबंधों में नकल की यह प्रवृत्ति इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि अनेक विश्वविद्यालय तो इस चोरी को पकड़ने के लिए सॉफ्टवेयर तक इस्तेमाल करने लगे हैं। और जब बात सॉफ्टवेयर की चली है तो यह भी ज़िक्र अप्रासंगिक नहीं होगा कि भारत दुनिया के उन देशों में प्रमुख है जहां सॉफ्टवेयर की पायरेसी बहुत अधिक चलन में है। ऐसा करने वालों का तर्क प्राय: यह होता है कि क्या करें, ओरिजिनल सॉफ्टवेयर बहुत महंगे होते हैं।" वैसे इस तर्क में कोई दम नहीं है। कोई चीज़ महंगी है इसका मतलब यह कैसे हो गया कि आप उसकी चोरी कर लें! लेकिन फिर भी इस तरह की चोरी का तर्क समझ में आता है। कृपया समझ को सहमति का पर्याय न मान लें।

लेखन की दुनिया में चोरी के जो बहुत सारे मामले प्रकाश में आते हैं, उनमें से कुछ तो ऐसे होते हैं जिनमें बेवजह या बावजह बात का बतंगड़ बनाया जाता है। ख़ुद को प्रकाश में लाने के लिए या सामने वाले को ब्लैकमेल करने के लिए भी ऐसे आरोप लगाए जाते हैं। बहुत बार साम्य आकस्मिक भी होता है, और अनेकानेक कारणों से इसे नकल या चोरी के खाते में डाल दिया जाता है। बहुत बार ऐसा भी होता है कि किसी की महत्वाकांक्षा ज़ोर मारती है कि मुझे लेखक के रूप में प्रतिष्ठित होना चाहिए, जबकि उसमें ऐसी कोई दक्षता नहीं होती है। तब वह, अगर समर्थ हो तो घोस्ट राइटिंग का सहारा लेता है और अगर समर्थ न हो तो सीधे नकल करके अपनी हवस पूरी करता है। ऐसों में भी जो समझदार होते हैं वे किसी कम ज्ञात लेखक की रचना की नकल करते हैं। जो घोर अज्ञानी होते हैं वे दिनकर, बच्चन की नकल करते हैं और फिर उपहास के पात्र बनते हैं।

यह जो मनोरोगी है इसका जैसे ख़ुद पर भी वश नहीं होता है। वही, लागी नाहीं छूटे रामा वाला मामला है। जैसे ही किसी अन्य का लिखा कुछ अच्छा देखा, उसे अपने नाम से छपवाने का मन हो जाता है। भले ही बाद में ऐसा करने पर कुछ पछतावा भी होता हो। क्या पता होता है या नहीं होता है! लेकिन ऐसा करके नुकसान तो हो ही जाता है। आपकी विश्वसनीयता ख़त्म हो जाती है और आप दूसरों की निगाहों में संदिग्ध बन जाते हैं।

यह समय कथेतर का है। लोग कहानी उपन्यास की बजाय गद्य की विविध विधाओं में लिख रहे हैं। कोई यात्रा वृत्तांत लिख रहा है तो कोई संस्मरण लिख रहा है। इनका लिखा लेखक बनने के आकांक्षी लोगों को बहुत आकर्षित करता है। और शायद इनके लिखे से भी ज़्यादा आकर्षित वे वैचारिक लेख करते हैं जो प्राय: समसामयिक विषयों पर समाचार पत्रों में प्रकाशनार्थ लिखे जाते हैं। उस्ताद लोग उन लेखों को सीधे कॉपी करते हैं और पेस्ट करके उस पर अपना नाम चिपका देते हैं। अब इतना ज़्यादा लिखा जा रहा है कि किसी भी संपादक के लिए यह सम्भव नहीं है कि वह प्राप्त हर रचना की मौलिकता की सही परख करे। काम के दबाव में वह जाने-पहचाने नाम से आई रचना को तो तुरंत स्वीकार कर ही लेता है।

मुझे आश्चर्य इस बात पर होता है कि जो लोग दस-बीस साल से लिख रहे हैं, छप रहे हैं और जिनके खाते में अनेक सम्मान व पुरस्कार भी हैं वे किस मोह में इस तरह की चोरी करते हैं? क्या इसलिए कि वे बिना लिखे अपनी प्रकाशित रचनाओं की संख्या बढ़ाना चाहते हैं? क्या उन्हें पारिश्रमिक की अल्प राशि का मोह होता है? सच तो यह है कि हिंदी में ज़्यादातर प्रकाशन कोई पारिश्रमिक देते ही नहीं हैं। ऐसी स्थिति में उनका यह कृत्य मेरी तो समझ से परे है। पता नहीं उन्हें यह बात मालूम है या नहीं कि ऐसा करके वे ख़ुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं। मान लीजिए, ऐसे किसी लेखक की पहले कुछ किताबें छपी हैं। जब उनकी इस चोरी का पता चलता है तो क्या आपको भी यह संदेह नहीं होता है कि पहले जो किताबें छपी हैं वे भी ऐसे ही चोरी करके तैयार की गई होंगी। बस, हमें ही पता नहीं चला। और इस तरह उनका मौलिक काम भी संदेह के घेरे में आ जाता है। यह कोई अच्छी स्थिति नहीं है।

कभी-कभी मुझे लगता है कि ऐसा करने वाले लोग अपराधी न होकर बीमार होते हैं। वे एक मनोरोग, जिसे क्लिप्टोमैनिया कहा जाता है, के शिकार होते हैं। एक परिभाषा के अनुसार, क्लिप्टोमैनिया (Kleptomania) एक मानसिक स्वास्थ्य विकार है, जिसमें व्यक्ति को बार-बार चोरी करने की अनियंत्रित इच्छा होती है, भले ही उसकी उस चीज की कोई जरूरत न हो या उसका कोई आर्थिक मूल्य न हो। यह एक आवेग नियंत्रण विकार (Impulse Control Disorder) की श्रेणी में आता है।" यहां हम भी यही पाते हैं कि दूसरे का लिखा अपने नाम से छपवाने की प्रवृत्ति के मूल में किसी लाभ की आकांक्षा नहीं है और न ऐसे किसी लाभ की सम्भावना है। लेकिन यह जो मनोरोगी है इसका जैसे ख़ुद पर भी वश नहीं होता है। वही, लागी नाहीं छूटे रामा वाला मामला है। जैसे ही किसी अन्य का लिखा कुछ अच्छा देखा, उसे अपने नाम से छपवाने का मन हो जाता है। भले ही बाद में ऐसा करने पर कुछ पछतावा भी होता हो। क्या पता होता है या नहीं होता है! लेकिन ऐसा करके नुकसान तो हो ही जाता है। आपकी विश्वसनीयता ख़त्म हो जाती है और आप दूसरों की निगाहों में संदिग्ध बन जाते हैं।

ऐसी स्थितियों में बहुत सारे लोग यह कहते हैं कि अगर किसी को किसी के ऐसे चौर्य कर्म का पता चले तो उसे खुलकर नाम लेना चाहिए, और अगर नाम लेने का साहस न हो तो फिर इस मुद्दे को उठाना भी नहीं चाहिए। नाम न लेने के पीछे मुख्यत: व्यक्तिगत संबंधों की बात होती है। लेकिन इस संकोच का जवाब मुंशी प्रेमचंद अपनी कहानी 'पंच परमेश्वर' में दे चुके हैं। वहां खाला अलगू चौधरी से कहती है: "क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न कहोगे?" लेकिन मुझे लगता है कि यहां बात केवल बिगाड़ के डर की नहीं है। बात यह भी है कि अगर किसी ने किसी भी वजह से इस तरह का ग़लत काम किया है तो उसे बदनामी की इतनी बड़ी सज़ा देने से पहले सुधरने का मौका भी दिया जाना चाहिए। बग़ैर नाम लिए बात करके यही प्रयास किया जाता है। समझने वाला तो समझ ही जाता है।

आपको क्या लगता है? क्या सीधे-सीधे नाम ले लिया जाना चाहिए? या फिर सुधरने का मौका दिया जाना चाहिए!

पुनश्च: यह संपादकीय लिख चुकने वाले दिन और इसे 'राष्ट्रदूत' को भेजने वाली सुबह के बीच की रात एक सपना आया। सपना यह कि मेरे इस आलेख को ऐसे ही किसी कॉपी पेस्ट वीर ने अपने नाम से छपवा लिया है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

क्या संकेत दे रहे योगी आदित्यनाथ?

विनोद पाठक

भाजपा समर्थक अक्सर यह नारा देते हैं कि मोदी के बाद योगी। नरेंद्र मोदी के बाद योगी आदित्यनाथ को देश के अगले प्रधानमंत्री के रूप में एक बड़ा वर्ग प्रोजेक्ट करता आ रहा है। पिछले 8 साल से योगी आदित्यनाथ आबादी के लिहाज से देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की कमान संभाल रहे हैं। कानून-व्यवस्था के साथ विकास के एक नए मॉडल के रूप में उन्होंने उत्तर प्रदेश को पेश किया है, लेकिन अपनी सरकार के 8 साल पूरे होने पर एक साक्षात्कार में योगी आदित्यनाथ ने यह कहते हुए सबको चौंका दिया कि राजनीति उनके लिए महज एक कोई फुल टाइम जॉब नहीं है, असल में वह एक योगी हैं, जब तक वह यहां हैं, काम कर रहे हैं। आखिर इस बयान के पीछे योगी आदित्यनाथ की क्या मंशा हो सकती है? यह सत्य है कि वह गोरखनाथ मठ के गोरक्षपीठाधीश्वर हैं और अक्सर लखनऊ छोड़कर गोरखपुर में अपने मठ चले जाते हैं। यह सिलसिला उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद भी जारी है। उनका यह बयान क्या उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में देख रहे समर्थकों के लिए एक झटका है या भारतीय जनता पार्टी के अंदर चल रही अंदरूनी खींचतान या वो संघ और पार्टी को कोई संकेत दे रहे हैं?

वर्तमान में योगी आदित्यनाथ हिंदुत्व का बड़ा चेहरा है। फायर ब्रांड नेता हैं। देशभर में भाजपा उन्हें प्रचार के लिए भेजती है और उनकी सबसे अधिक डिमांड रहती है। अपने सख्त प्रशासनिक कौशल को लेकर उनकी एक बड़ी फैन फॉलोइंग है। यही कारण है कि वह उत्तर प्रदेश में लगातार दूसरी बार बहुमत की सरकार चला रहे हैं। वह जो कहते हैं, वो करके दिखाते हैं, लेकिन क्या ऊपर से जो दिख रहा है, वो उतना सरल है? शायद नहीं। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव पर यदि नजर दौड़ाएं तो उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को सबसे बड़ा धक्का लगा था। यह माना गया कि योगी आदित्यनाथ के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए पार्टी के भीतर ही राजनीतिक खेल चले और प्रदेश में पार्टी की सीटें सिमट कर रह गईं। योगी आदित्यनाथ के सुझाए नेताओं को टिकट नहीं मिला।

योगी आदित्यनाथ का एक लंबा राजनीतिक करियर है। वर्ष 1998 में महज 26 साल की उम्र में वह गोरखपुर से सांसद चुनकर लोकसभा में पहुंचे थे। उन्होंने लगातार पांच लोकसभा चुनावों में गोरखपुर से जीत हासिल की। सांसद रहते हुए भी वह सदन के अंदर या बाहर सक्रिय रहते थे। उनका अंदाज आज भी नहीं बदला है। पूर्वांचल में वह माफिया से शुरुआत से लोहा लेते रहे। यही कारण रहा कि बड़ी फैन फॉलोइंग उन्होंने न केवल उत्तर प्रदेश, बल्कि दुनिया भर में खड़ी की है। इन सबके बीच एक बड़ा वर्ग योगी आदित्यनाथ को प्रधानमंत्री के रूप में प्रोजेक्ट कर आगे बढ़ा रहा है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि योगी आदित्यनाथ को लेकर भारतीय जनता पार्टी का रुख क्या है?

वर्ष 2017 में जब उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव हो रहे थे तो प्रचार में सबसे बड़ी भूमिका योगी आदित्यनाथ ने निभाई थी। हालांकि, उस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने किसी को मुख्यमंत्री पद का चेहरा नहीं बनाया था। जब बहुमत मिला तो कई नाम चर्चाओं में चल रहे थे, लेकिन अंतत: पार्टी ने योगी आदित्यनाथ पर भरोसा जताया। वो उस भरोसे पर खरा उतरे हैं। प्रदेश में सबसे बड़ी चुनौती कानून व्यवस्था की थी, जिसे बहुत जल्द योगी आदित्यनाथ पटरी पर ले आए। प्रदेश की अर्थव्यवस्था को भी योगी आदित्यनाथ ने सही ट्रैक पर लाने का काम किया है। आज उत्तर प्रदेश एक बीमारू राज्य न होकर सफलता की नई ऊंचाइयों को छू रहा है।

पिछले दिनों प्रयागराज में सफल महाकुंभ मेले के आयोजन बाद योगी आदित्यनाथ की फैन फॉलोइंग और बढ़ गई है। योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन डॉलर बनाने की बात कह रहे हैं। अपराध मुक्त और समृद्ध उत्तर प्रदेश का सपना दिखाकर योगी आदित्यनाथ दिल्ली की कुर्सी पर नजर रखते हैं, ऐसा उनके विरोधी भी मानते हैं। वर्ष 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले समाजवादी पार्टी के प्रमुख व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव में एक साक्षात्कार में कहा था कि यदि योगी आदित्यनाथ दोबारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनते हैं तो वह प्रधानमंत्री पद के दावेदार हो जाएंगे।

अब राजनीति को फुल टाइम जॉब न बताकर योगी आदित्यनाथ ने एक नई बहस को जन्म दे दिया है। उनके आलोचक कहते हैं कि योगी आदित्यनाथ की रुचि लखनऊ से अधिक गोरखपुर के गोरखनाथ मठ में रहती है। क्या यह माना जाए कि योगी आदित्यनाथ कोई संकेत दे रहे हैं? क्या उत्तर प्रदेश या कहें कि भारतीय जनता पार्टी की राजनीति में कुछ उथल-पुथल चल रही है, जो बाहर से नहीं दिख रही है। पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नागपुर में संघ मुख्यालय गए थे। वहां क्या चर्चा हुई?

यह स्पष्ट नहीं हुआ है, लेकिन योगी आदित्यनाथ का यह बयान उसके बाद ही आया है। संघ की तरफ से अभी कोई स्पष्ट संकेत नहीं है कि नरेंद्र मोदी के बाद संघ किस राजनेता को आगे बढ़ाने की सोच रहा है। हालांकि, योगी आदित्यनाथ संघ के हर पैमाने पर फिट बैठते हैं। उन्हें राजनीति का लंबा अनुभव है। शासन चलाने का कौशल वह जानते हैं। हिंदुत्व का बड़ा चेहरा हैं। क्या यह मान लिया जाए कि योगी आदित्यनाथ ने यह जो बयान दिया है, वो महज अकस्मात है। वह केवल यह बता रहे हैं कि जब तक उन्हें दायित्व मिलता रहेगा, वह राजनीति करते रहेंगे।

फिलहाल उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ को विपक्ष की ओर से कोई बहुत बड़ी चुनौती मिलती नहीं दिख रही है। उत्तर प्रदेश में वर्ष 2027 में विधानसभा चुनाव प्रस्तावित हैं और योगी आदित्यनाथ तीसरी बार फिर विपक्ष से दो-दो हाथ करते हुए नजर आने वाले हैं। आज की तारीख में वह बेहद मजबूत स्थिति में नजर आते हैं। स्पष्ट है कि योगी आदित्यनाथ राजनीति को भले फुल टाइम जॉब न कहें, लेकिन उन्होंने पार्टी और संघ को इशारों में कुछ संकेत जरूर दिया है।

–विनोद पाठक

महिलाओं तक सशक्त स्वास्थ्य की कुंजी पहुंचाने का प्रयास है "शक्ति वंदन"

सर्वाइकल कैंसर के प्रति जागरूकता के साथ ही टीकाकरण से महिलाओं की भावी पीढ़ी सुरक्षित रहेगी

डॉ. सौम्या गुर्जर

विश्व स्वास्थ्य दिवस की इस वर्ष की थीम है, स्वस्थ शुरुआत, आशावादी भविष्य। विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूएचओ ने मां एवं नवजात के स्वास्थ्य के लिए जागरूकता के साथ ही महिलाओं के दीर्घावधि स्वास्थ्य एवं उनके सुरक्षित जीवन इस वर्ष जागरूकता विषय चुना है। महिला सशक्तिकरण पर चर्चा अक्सर शिक्षा, रोजगार, और अधिकारों तक सीमित रह जाती है, परंतु स्वास्थ्य, जो सशक्तिकरण की सबसे बुनियादी और गहन आवश्यकता है, कई बार उपेक्षित रह जाता है। इस वर्ष डब्ल्यूएचओ महिलाओं के स्वास्थ्य को केन्द्र में रख रहा है। मातृत्व संबंधी स्वास्थ्य कठिनाईयों के साथ ही महिलाएं इन दिनों एक और बड़ी स्वास्थ्य संबंधि चुनौती से जूझ रही हैं। और वह है सर्वाइकल कैंसर अर्थात् गर्भाशय ग्रीवा का कैंसर।

जयपुर में जब भी मैं अपने स्वस्थ्य योद्धाओं से मिलती हूं, उनके परिवारों से मिलती हूं, तो मुझे लगता है कि एक चीज़ की कमी है। उनका अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को लेकर थोड़ा सा अभाव मुझे नज़र आता है। मैंने उनसे पूछा कि क्या आपने सर्वाइकल कैंसर की जांच करवाई है? तो उनका उल्टा सवाल होता, यह क्या होता है? क्यों ज़रूरी है? यह स्थिति मैंने अच्छी पढ़ी लिखी महिलाओं के बीच भी पाई। उनको भी इसकी गम्भीरता का अंदाजा नहीं है। महिलाओं के स्वास्थ्य की सबसे बड़ी चुनौतियों में से है यह। भारत में महिलाओं को होने वाले कैंसर में पहले नंबर पर जहाँ ब्रेस्ट कैंसर तो दूसरे नंबर पर सर्वाइकल कैंसर है। सबसे महत्वपूर्ण बात है कि यदि समय पर वैक्सीन लग जाए तो सर्वाइकल कैंसर से बचा जा सकता है। पर इसके लिए जागरूकता आवश्यक है। इसी वजह से जयपुर में हाल ही में संपन्न "शक्ति वंदन महोत्सव" को केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव की ओर उठाया गया एक अभूतपूर्व कदम कहना उचित होगा। हमने इस आयोजन के दौरान पाँच सौ से अधिक बच्चियों को सर्वाइकल कैंसर से बचाने के लिए एचपीवी टीका लगाया। यह एक आँकड़ा मात्र नहीं है, बल्कि बेटियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा के प्रति एक दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतीक है। परंतु इस पहल के दौरान यह भी उजागर हुआ कि समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का स्तर अभी भी बहुत कम है। डर, भ्रांतियों और जानकारी के अभाव के कारण, टीकाकरण जैसे सरल और प्रभावी समाधान को भी कई बार संदेह की दृष्टि से देखा जाता है।

जब मैंने सोचा की शक्ति वंदन कार्यक्रम में इस बार महिलाओं के स्वरोजगार के साथ ही उनके स्वास्थ्य के विषयों खास कर सर्वाइकल कैंसर के खतरों के बारे में चर्चा करें। साथ ही सर्वाइकल कैंसर का नि शुल्क वैक्सीन लगाने का निजी तौर से प्रयास किया। सबसे बड़ी चुनौती इस लगवाने के लिए संभावितों को तैयार करने में ही आई।

भले ही हज़ारों रुपया में लगने वाला यह वैक्सीन उन्हें निशुल्क लग रहा था किन्तु इसके लिए मनाना कठीन हो रहा था। बहुत कोशिश करने पर कुछ स्वच्छता योद्धा तैयार हुईं। फिर स्कूल की बच्चियों के अभिभावक समझाने पर तैयार हुए। धीरे-धीरे को समझाया, उनके परिवारों को और स्कूल की बच्चियां आगे आयी और लगभग पांच सौ के आस पास वैक्सीन लगवाए। महिलाओं की स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति शुरुआती लापरवाही की वास्तविकता हमें भीतर तक झकझोरती है। यह सिर्फ एक टीकाकरण अभियान नहीं था; यह उन परिवारों के प्रति हमारा सामाजिक दायित्व था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नारी शक्ति वंदन दृष्टिकोण के तहत, शक्ति वंदन पहल ने महिला स्वास्थ्य और सुरक्षा को राष्ट्रीय प्राथमिकता दी है। यह प्रयास न केवल एक चिकित्सा पहल है, बल्कि बेटियों को भयमुक्त और स्वस्थ जीवन जीने की ताकत देने का एक संकल्प है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 2030 तक सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिसमें लड़कियों के लिए एचपीवी वैक्सीन, महिलाओं की नियमित स्क्रीनिंग और प्रभावी उपचार को सुनिश्चित करना शामिल है। भारत ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रतिबद्धता जताई है, लेकिन केवल नीतिगत प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। इसके लिए सामाजिक जागरूकता को एक आंदोलन में बदलने की आवश्यकता है। जयपुर में शक्ति वंदन जैसी पहलें यह दिखाती हैं कि बदलाव संभव है, लेकिन इसे व्यापक और गहरा बनाने की जिम्मेदारी हम सभी पर है। जब हमारी बेटियो स्वस्थ होंगी, तभी भारत वास्तव में सशक्त और समृद्ध होगा।

डॉ. सौम्या गुर्जर
महापौर नगर निगम ग्रेटर
जयपुर

भारत-पाक सीमा पर 26 साल बाद कंटीली तारबंदी के साथ स्मार्ट फैन्सिंग भी लगेगी

- **करीब 1070 किलोमीटर लंबी स्मार्ट फैन्सिंग का यह प्रोजेक्ट श्रीगंगानगर बॉर्डर से शुरू किया गया है**
- **अनूपगढ़ इलाके में 11 किलोमीटर लंबी स्मार्ट फैन्सिंग लगाने का प्रोजेक्ट लगभग पूरा हो गया है**
- **स्मार्ट फैन्सिंग का काम शुरू, इसमें सेंसर लगे हुए हैं, उसकी रेंज में आते ही अलार्म बज उठेगा और घुसपैठिए को वहीं ढेर कर दिया जाएगा**

बीकानेर, (निसं)। पश्चिमी राजस्थान से सटी करीब 1070 किलोमीटर लंबी भारत-पाक सीमा पर घुसपैठ अब आसान नहीं होगी। कंटीली तारबंदी के साथ स्मार्ट फैन्सिंग का काम शुरू हो गया है, जिसमें सेंसर लगे हुए हैं। उसकी रेंज में आते ही अलार्म बज उठेगा और घुसपैठिए को वहीं ढेर कर दिया जाएगा। बॉर्डर पर 1999 में कंटीली तारबंदी की गई थी।

भारत-पाक सीमा की पश्चिमी सरहद को स्मार्ट फैन्सिंग से सील करने की तैयारी शुरू कर दी गई है। करीब 1070 किलोमीटर लंबी स्मार्ट फेंसिंग का यह प्रोजेक्ट श्रीगंगानगर बॉर्डर से शुरू किया गया है। अनूपगढ़ इलाके में कैलाश और शेरपुर सीमा चौकी के बीच 11 किलोमीटर लंबी स्मार्ट फेंसिंग लगाने का प्रोजेक्ट लगभग पूरा हो गया है। यह इलाका घग्घर नदी बहाव क्षेत्र का है। जीरो लाइन से महज 150 मीटर की दूरी पर रेत के बजाय पत्थर के फाउंडेशन पर प्लास्टिक कोटेड तारों की दीवार खड़ी की गई है। इसे कोबरा वायर, सेंसर और सीसीटीवी कैमरों से लैस किया गया है। फेंसिंग में बिजली का करंट छोड़ने की भी व्यवस्था है। इस तारबंदी को लांघना आसान नहीं है। खास बात ये है कि इस पर जंग नहीं लगेगा। घग्घर नदी के पानी में भी यह तारबंदी खराब नहीं होगी। बीएसएफ आईजी एमएल गर्ग ने हाल ही में खाजूवाला से लेकर घड़साना तक पांच बीओपी का जायजा लेकर तारबंदी की स्थिति भी देखी है।

गौरतलब है कि उस इलाके में बीएसएफ की तारबंदी जीरो लाइन से करीब डेढ़ किलोमीटर मीटर पीछे थी। घग्घर नदी में बाढ़ आने पर तारबंदी पानी में डूब जाती थी। इस इलाके में घना जंगल और खेत हैं। भारतीय किसानों को अंतरराष्ट्रीय गेट खोलकर एक निश्चित समय के लिए खेती पर जाने की इजाजत दी जाती है। इसके लिए बीएसएफ ने सभी के पास बनाए हुए हैं। वहां से करीब दो सौ मीटर की दूरी पर पाक रेंजर भी तैनात रहते हैं। इसलिए घुसपैठ और नशीले पदार्थों की तस्करी का खतरा हमेशा बना रहता था। इसे देखते हुए स्मार्ट फेंसिंग का कांसेप्ट इजराइल की तर्ज पर लाया गया है। पिछले साल इसे पायलट प्रोजेक्ट के तहत राजस्थान, पंजाब और जम्मू-कश्मीर में घुसपैठ वाले अति संवेदनशील इलाके में शुरू किया गया था। बॉर्डर पर घुसपैठ और तस्करी रोकने के लिए और भी बदलाव किए जा रहे हैं। बॉर्डर पर सीमा पार पाकिस्तान में पांच किलोमीटर एरिया तक कड़ी निगरानी रखने के लिए कॉम्प्रहेंसिव इंटीग्रेटेड बॉर्डर मैनेजमेंट सिस्टम (सीआईबीएमएस) से भारतीय सीमा चौकियों को लैस किया गया है। इसके तहत सभी बीओपी पर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, जो रात में भी पांच किलोमीटर दूर तक पाक सीमा में निगरानी रखने में सक्षम है। सीमा चौकियों पर बने कंट्रोल रूम से जवान बिग स्क्रीन के जरिए तारबंदी पर निगरानी रखते हैं।

स्मार्ट फेंसिंग में सतर्कता, निगरानी, संचार और डेटा स्टोरेज के लिए थर्मल इमेजर, अंडरग्राउंड सेंसर, फाइबर ऑप्टिकल सेंसर, राडार और सोनार जैसे हाईटेक उपकरण लगाए गए हैं। इस फेंसिंग पर लगी इंफ्रा रेड और लेजर बेस्ड इंटूजन डिटेक्टर जमीन और नदी के आसपास के क्षेत्र में एक अदृष्य दीवार का काम करते हैं। सोनार सिस्टम नदी के रास्ते घुसपैठ की कोशिश को नाकाम कर देता है। ऐरो स्टेट तकनीक आसमान में किसी भी हरकत पर नजर रखेगी। सुरंग के रास्ते घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करने के लिए भूमिगत सेंसर लगाए गए हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 7 अपैल, 2025

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, पुष्य नक्षत्र प्रात: 6:25 तक, धृति योग सायं 6:19 तक, तैतिल करण प्रात: 7:42 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रात: 6:25 तक है। रवि योग सम्पूर्ण दिन-रात है। ज्वालामुखी योग प्रात: 6:25 से रात्रि 8:01 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:44 तक, शुभ 9:22 से 10:56 तक, चर 2:03 से 3:56 तक, लाभ-अमृत 3:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:15, सूर्यास्त 6:42

मेष
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

कर्क
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मकर
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।